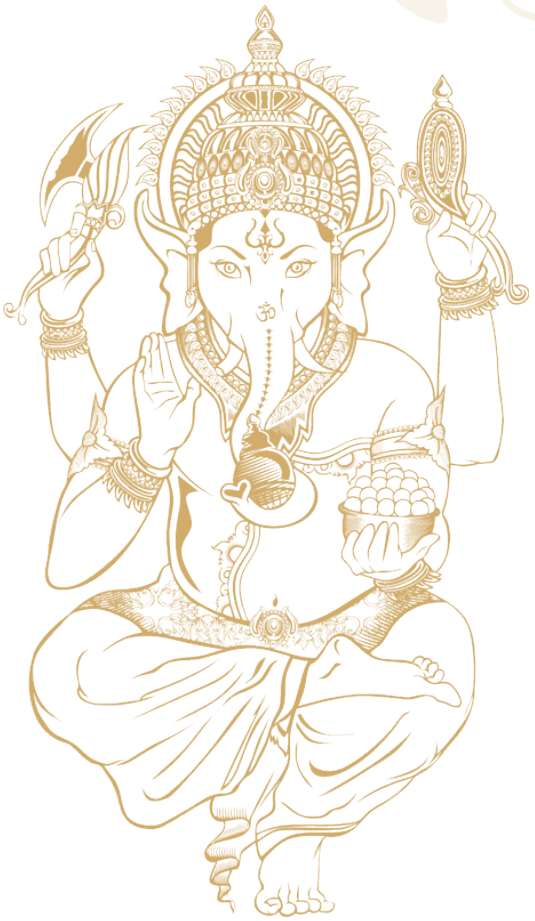

Mr.p

Ms.p

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119561105

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
26/07/1998	जन्म तिथि	27/06/2004
रविवार	दिन	रविवार
घंटे 15:20:00	जन्म समय	17:00:00 घंटे
घटी 24:12:38	जन्म समय(घटी)	28:56:02 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Bulandshahr
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:30:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:49:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:18:44 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:38:56	सूर्योदय	05:23:32
19:15:54	सूर्यास्त	19:19:59
23:50:07	चित्रपक्षीय अयनांश	23:55:01

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
केतु 0वर्ष 1मा 18दि		14:02:26	वृश्चि	लग्न	वृश्चि	11:59:17	मंगल 1वर्ष 8मा 26दि	
चन्द्र		09:23:09	कर्क	सूर्य	मिथु	12:13:34	गुरु	
13/09/2024		13:04:38	सिंह	चंद्र	तुला	03:21:13	24/03/2024	
13/09/2034		19:34:33	मिथु	मंगल	कर्क	08:21:27	24/03/2040	
चन्द्र	14/07/2025	03:31:42	सिंह	बुध	मिथु	22:22:12	गुरु	12/05/2026
मंगल	12/02/2026	04:06:38	मीन व	गुरु	सिंह	18:56:39	शनि	23/11/2028
राहु	14/08/2027	14:20:00	मिथु	शुक्र व	वृष	15:49:47	बुध	28/02/2031
गुरु	13/12/2028	09:26:03	मेष	शनि	मिथु	21:27:46	केतु	04/02/2032
शनि	14/07/2030	07:46:12	सिंह	राहु	मेष	15:42:55	शुक्र	05/10/2034
बुध	14/12/2031	07:46:12	कुंभ	केतु	तुला	15:42:55	सूर्य	25/07/2035
केतु	14/07/2032	17:14:42	मक व	हर्ष व	कुंभ	12:46:00	चन्द्र	23/11/2036
शुक्र	15/03/2034	06:52:03	मक व	नेप व	मक	21:03:07	मंगल	29/10/2037
सूर्य	13/09/2034	11:34:41	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	26:34:17	राहु	24/03/2040

लग्न-चलित

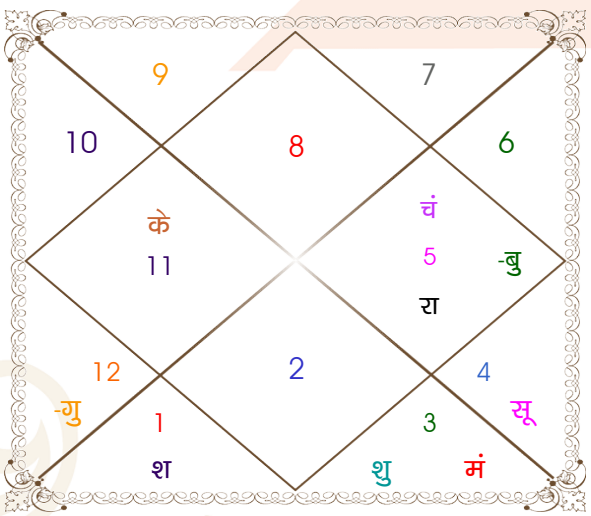

लग्न-चलित

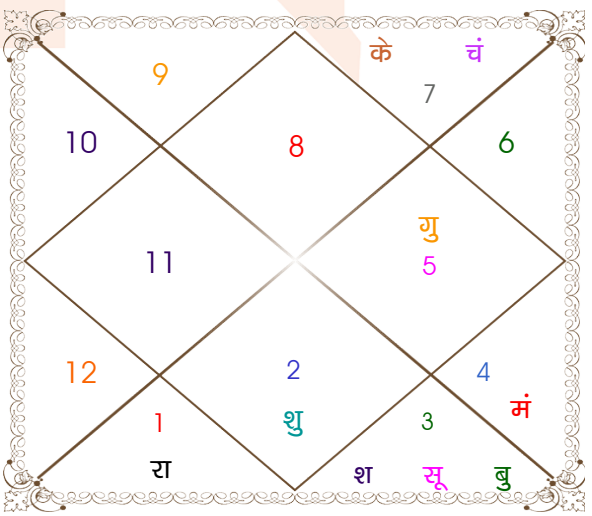

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	वनचर	मानव	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मूषक	व्याघ्र	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	सूर्य	शुक्र	5	0.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	सिंह	तुला	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	25.50		

डतण्च का वर्ग मूषक है तथा डेण्च का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्च और डेण्च का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्च मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

डेण्च मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि डेण्च कि कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डेण्च कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्च तथा डेण्च में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।